बीएसईस उपभोक्ताओं ने शुरू किया 4620 किलोवॉट सौर ऊर्जा का उत्पादन

नई दिल्लीः 28 अप्रैल, 2016। बीएसईएस उपभोक्ताओं ने अपनी छतों पर सोलर पैनल लगवाकर, 4620 किलोवॉट सौर ऊर्जा का उत्पादन शुरू कर दिया है। यानी, अब उन्हें 4620 किलोवॉट बिजली उनकी अपनी छतों पर लगे सोलर पैनलों के माध्यम से मिलेगी। सौर ऊर्जा का उत्पादन शुरू करने वाले उपभोक्ताओं में ज्यादातर घरेलू उपभोक्ता और नामी स्कूल व शैक्षिक संस्थान हैं।

अब तक कुल 113 उपभोक्ताओं ने सौर ऊर्जा के प्लांट लगवाए हैं और उन्होंने अपनी जरूरत की बिजली का उत्पादन करना शुरू कर दिया है। सौर ऊर्जा से न सिर्फ पंखे व कूलर जैसी कम बिजली खपत वाले उपकरण चलाए जा रहे हैं, बल्कि उपभोक्ता एसी व अन्य भारी लोड वाले बिजली उपकरण भी सौर ऊर्जा की सहायता से चला रहे हैं।

सौर ऊर्जा को बैटरी में स्टोर नहीं करना पड़ेगाः

आमतौर पर सौर ऊर्जा की बिजली का या तो उसी वक्त इस्तेमाल किया जाता है, या फिर उस ऊर्जा को बैटरी में स्टोर करके उसे बाद में उपयोग के लिए रखा जाता है। इस प्रक्रिया में बैटरी पर अच्छी– खासी लागत आती है। लेकिन, बीएसईएस उपभोक्ताओं को सौर ऊर्जा को स्टोर करने के लिए बैटरी पर पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि, उनके इस्तेमाल के बाद बची हुई बिजली नेट मीटरिंग के माध्यम से वापस बीएसईएस के ग्रिड में चली जाएगी। उपभोक्ता के सोलर पैलनों से जितनी बिजली बीएसईएस के ग्रिडों में आएगी, उसके लिए उसे बीएसईएस, डीईआरसी द्वारा अप्रूव्ड दरों पर भुगतान भी करेगी।

सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन के लिए जरूरी चीजेंः

एक किलोवॉट क्षमता वाले सौर ऊर्जा प्लांट के लिए आपको 10 वर्गमीटर के रूफटॉप की जरूरत होगी। अधिक रोशनीदार छत चाहिए, जहां छाया न हो। सौर ऊर्जा प्लांट पर, आमतौर पर 80,000 रूपये प्रति किलोवॉट की लागत आती है। सौर ऊर्जा प्लांट का सेटअप स्थापित करने से पहले या बाद में भी आप नेट मीटरिंग के लिए डिस्कॉम को आवेदन दे सकते हैं।

कितने दिनों में मिलेगा सौर ऊर्जा का कनेक्शनः

जिन उपभोक्ताओं के पास सौर ऊर्जा का सेटअप है, वे अपने डिस्कॉम को नेट मीटरिंग के लिए आवेदन दे सेकते हैं। नेट मीटरिंग के लिए एक फॉर्म है, जिसे बीएसईएस की वेबसाइहट www.bsesdelhi.com से डाउनलोड किया जा सकता है। भरा हुआ फॉर्म 500 रूपये के तय शुल्क के साथ डिस्कॉम के मीटरिंग सेल में जमा कराया जा सकता है। यदि तकनीकी रूप से संभव है, तो इंस्टॉलेशन के पश्चात, जरूरी व्यावसायिक औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद, नेट मीटर लगाने में सामान्यतया 15 दिनों को वक्त लगता है।

सौर ऊर्जा के उपयोग से लाभः

सौर ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल कर उपभोक्ता अपने बिजली बिलों में भारी कमी ला सकते हैं। आप सौर ऊर्जा का जितना अधिक उत्पादन करेंगे, आपके बिजली बिल में उतनी ज्यादा कमी आएगी। जैसे कि, अगर कोई उपभोक्ता महीने में 500 यूनिट बिजली की खपत करता है और वह 400 यूनिट सौर ऊर्जा का उत्पादन करता है, तो महीने के अंत में वह डिस्कॉम को सिर्फ 100 यूनिट के बिल का भुगतान करेगा।

स्कूलों में लोकप्रिय हो रहा है नेट मीटरिंगः

बीएसईएस क्षेत्र के 26 नामी स्कूलों व शिक्षण संस्थानों ने सौर ऊर्जा/ नेट मीटरिंग के कनेक्शन लिए हैं। उनका सैंक्शंड लोड 1000 किलोवॉट से भी अधिक है। नेट मीटरिंग कनेक्शन लेने वाले प्रमुख स्कूलों में शामिल हैं– वसंत वैली, टैगोर इंटरनैशनल, न्यू एरा पब्लिक स्कूल, फादर ऐग्नेल स्कूल, वेंकटेश्वरा स्कूल, भटनागर इंटरनैशनल स्कूल, सेंट सीसीलिया पब्लिक स्कूल, ईस्ट पॉइंट स्कूल, विवेकानंद पब्लिक स्कूल, एमएस मुखर्जी मेमोरियल स्कूल, आदि।

देश के कुल सौर ऊर्जा कनेक्शनों का 1 प्रतिशत हिस्सा बीएसईएस ने लगाया

भारत के कुल रूफ टॉप सौर ऊर्जा कनेक्शनों का 1 प्रतिशत हिस्सा बीएसईएस ने कुछ ही महीनों के भीतर लगा दिया है। यह बताना भी जरूरी होगा कि कई अन्य इलाकों के मुकाबले बीएसईएस क्षेत्र में 300 प्रतिशत अधिक रूफ टॉप सौर ऊर्जा कनेक्शन लगाए गए हैं।

दिल्ली की प्रमुख बिजली वितरण कंपनियां बीआरपीएल और बीवाईपीएल आर–इंफ्रा तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के बीच संयुक्त उद्यम हैं।

———